पशु प्रजनन में खनिज मिश्रण का महत्व

डॉ. अवनीश कुमार सिंह, डॉ. महेश कुमार
मादा पशु प्रजनन रोग विभाग दुवासू, मथुरा (उत्तर प्रदेश)

ग्रामीण परिवेश में रहने वालें लोगों के जीविकोपार्जन में पशुपालन की अहम भूमिका है। पशुपालन में सबसे बड़ी समस्या प्रजनन विकार (पशु का गर्मी में ना आना, गर्भ का ना ठहरना, अंडाशय में रसौली, गर्भपात, जेर का अटकना, मद चक्र अनियमितता, कठिन प्रसव, गर्भाशय भ्रंश, गर्भाशय शोध आदि) है, जिसका एक कारण पशुओं में विटामिन व खनिज तत्वों की कमी भी हैं, जो इस प्रकार हैं-

विटामिन-ए :- यह बच्चेदानी की अंदरूनी परतों को स्वास्थ्य रखने में मददगार होती हैं। इसकी कमी से यौवनावस्था एवं यौवन परिपक्वता में विलम्ब, गर्भपात, भ्रूण की म्रत्यु, जेर का अटकना, मद चक्र अनियमितता, गर्भाशय शोध आदि विकार हो सकते हैं ।

विटामिन-डी$_3$:- यह जी. एन. आर. एच. हार्मोन के स्राव के लिए बहुत प्रभावी होती हैं। इसकी कमी से यौवन परिपक्वता में विलम्ब होने की सम्भावना रहती हैं ।

विटामिन-ई :- यह शरीर में बनने वाले ऑक्सीकारक तत्वों जो कि कोशिकाओं के लिए हानिकारक होते हैं उनको नष्ट करने, मादा पशुओं में भ्रूण को स्वास्थ्य रखने, जेर को समय से निकलने, मद चक्र को सामान्य रखने के साथ नर पशुओं के वृषण को स्वास्थ्य रखने में भी मदद करती हैं।

कैल्शियम :- इसकी कमी से गर्भाशय की मांसपेशियां शिथिल हो जाती है जिसके फलस्वरूप कठिन प्रसव, जेर का अटकना, गर्भाशय भ्रंश तथा प्रसव के बाद गर्भाशय पूर्वावस्था में देर से आने से अगला बच्चा देर से होना आदि विकार उत्पन्न हो सकते हैं।

फास्फोरस :- यह पशुओं की प्रजनन क्षमता को बढाने में मदद करता हैं। इसकी कमी से यौवनावस्था एवं यौवन परिपक्वता में विलम्ब, पशु का गर्मी में ना आना, गर्भ का ना ठहरना तथा बांझपन आदि विकार उत्पन्न हो सकते हैं।

कोबाल्ट :- कोबाल्ट की कमी से पशु का विकास धीमी गति से होता हैं जिसके फलस्वरूप यौवन परिपक्वता एवं प्रथम मद में विलम्ब, प्रसव के बाद गर्भाशय पूर्वावस्था में देर से आना, अनियमित मदचक्र, गर्भ का ना ठहरना आदि विकार उत्पन हो सकते हैं।

कॉपर :- इसकी कमी से पशु का विकास धीमी गति से होना, प्रजनन क्षमता कम होना, रोगप्रतिकारक क्षमता कम होना, यौवनारम्भ देर से होना, गर्भ का ना ठहरना, भ्रूण की म्रत्यु , जेर का अटकना आदि समस्याएं आ सकती है।

जिंक :- इस तत्व की कमी से भूख एवं प्रजनन क्षमता में कमी, पशु का विकास रुक जाना, वृषन का विकास न होना, अंडाशय का विकास न होना, मद चक्र मे अनियमितता, गर्भाधारण मे विलम्ब आदि विकार उत्पन्न हो सकते हैं।

मैंगनीज :- इस तत्व की कमी से पशु की प्रजनन क्षमता व गर्भधारण की दर मे कमी के साथ पशु का गर्मी में रहना परन्तु गर्मी के लक्षण न दिखना आदि विकार उत्पन्न हो सकते हैं।

सेलेनियम :- इसकी कमी से जेर का अटकना, गर्भाशय खराब होना, अंडाशय में रसौली, अनियमित मदचक्र, गर्भधारण न होना, रोगप्रतिरोधक क्षमता मे कमी तथा दुग्ध उत्पादन में गिरावट आना आदि विकार उत्पन्न हो सकते हैं।

आयोडीन :- इसकी कमी से गर्भपात, भ्रूण की म्रत्यु आदि विकार उत्पन हो सकते हैं।

सुझाव :-

इस लेख का अभिप्राय पशुपालकों में जागरूकता लाना है कि "रोकथाम इलाज से बेहतर है"- पशुओं के बेहतर स्वास्थ्य एवं प्रजनन में विटामिन व खनिज तत्वों की अहम भूमिका है, अत: पशुपालक खनिज मिश्रण का उपयोग समस्या के होने पर एक दवा के रुप में नहीं बल्कि पशु के दैनिक राशन में पूरक की तरह करें। गाय और भैंस को रोजाना ३०-५० ग्राम एवं छोटे पशुओं को २०-२५ ग्राम की दर से प्रति पशु रोजाना गुणवत्तापरक खनिज मिश्रण खिलाना लाभदायक होता है। किसी प्रजनन विकार होने पर अपने नजदीकी पंजीकृत पशु चिकित्सक से तुरन्त परामर्श लेना चाहिए।